بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 20.06.25

युद्धों में अति उत्तम सैन्य शैली के परिपेक्ष में सीरते नबवी ﷺ का बयान तथा ईरान इस्राईल विवाद के विषय में दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., , स्थान मस्जिद मुबारकबयान फर्मूदः 20 जून 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– मक्के के युद्ध का वर्णन हो रहा था, इसके लिए रवाना होने से पहले विवरण मिलता है कि एक सहाबी ने अपनी मूढ़ता के कारण आँहुज़ूर ﷺ की इस यात्रा की सूचना मक्का वालों को देने का प्रयास किया था, परन्तु अल्लाह तआला ने आप स. को इससे अवगत फ़रमा दिया और इस प्रकार आँहुज़ूर ﷺ के इस योजना की सूचना काफ़िरों को न पहुँच सकी। मदीने में जब मक्का जाने की तय्यारियाँ शुरू हुईं तो एक बदवी सहाबी हातिब बिन अबी बलतअः ने क़ुरैश को एक पत्र लिख कर सूचना देने का प्रयत्न किया कि रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हारी ओर प्रस्थान करने की योजना बना चुके हैं। आप रज़ी. ने यह पत्र एक महिला को दे दिया कि वह इस पत्र को गुप्त रूप से मक्का वालों को पहुंचा दे। इस महिला ने पत्र को अपने सिर की चोटी में रख लिया तथा सार्वजानिक मार्ग से हट कर अन्य रास्ते से मक्का की ओर रवाना हो गई। अल्लाह तआला ने इस पत्र के विषय में आप स. को सूचना दे दी। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. को बुलाया और एक अन्य सहाबी के साथ उन्हें रवाना किया ताकि वे यह पत्र वापस ला सकें। इन सहाबियों ने उस महिला को पकड़ लिया और पत्र वापस करने को कहा। आरम्भ में उस महिला ने इन्कार किया, परन्तु कठोरता से पूछने पर

पत्र निकल कर प्रस्तुत कर दिया। हज़रत अली रज़ी. इत्यादि उस महिला को लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में उपस्थित हुए। हज़रत हातिब बिन अबी बलतअः ने कहा कि मैं विश्वासघाती नहीं हूँ, बस मैंने चाहा कि मक्का वालों पर मेरा कोई उपकार हो जिसके बदले में मेरी सम्पत्ति एवं परिवार सुरक्षित रहें। नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि इसने सच कहा है, अतः तुम भी इसके विषय में भली बात के अतिरिक्त कुछ न कहो। फिर आप स. ने हज़रत उमर रज़ी. से पूछा कि क्या यह बदर के युद्ध में शामिल नहीं था, यह सुनकर हज़रत उमर रज़ी. की आँखों से आंसू जारी हो गए और आप रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि अल्लाह और उसका रसूल अधिक जानते हैं।

इसके बाद आँहुज़ूर ﷺ ने यात्रा आरम्भ की। आप स. मुहाजिरों तथा अंसार एवं अरब के अन्य लोगों के साथ रवाना हुए, जबकि रमज़ान के दस दिन बीत चुके थे। मुसनद अहमद की रिवायत के अनुसार आप स. 2 रमज़ान को मदीने से रवाना हुए। बुख़ारी के व्याख्या कर्ता अल्लामा इब्ने हजर ने भी 2 रमज़ान वाली रिवायत को प्राथमिकता दी है।

मदीने के लिए रवानगी के समय इस यात्रा में लगभग सात हज़ार चार सौ दलेर योद्धा शामिल थे। रास्ते में इस संख्या में वृद्धि होती गई। कुछ पुस्तकों में इस सेना की संख्या बारह हज़ार भी बयान हुई है परन्तु अधिकाँश पुस्तकों में यह संख्या दस हज़ार बयान हुई है, तथा यही अधिक् सटीक प्रतीत होती है।

इस यात्रा में आप स. के साथ आपकी पवित्र पत्नियों में से हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. थीं। कुछ कथनों के अनुसार हज़रत मैमूना रज़ी. भी आप स. के साथ थीं। कुछ रिवायतों में वर्णन मिलता है कि साहिबज़ादी हज़रत फ़ातमा रज़ी. भी आप स. के साथ थीं। यह यात्रा रमज़ान के महीने में हुई थी। यात्रा के आरंभिक दिनों में आप स. ने रोज़ा रखा और बाद में आप स. ने रोज़ा नहीं रखा, बल्कि शेष सहाबियों को भी आप स. ने रोज़ा रखने से मना फ़रमाया।

इस यात्रा में जानवरों से सहानुभूति की एक घटना यूं मिलती है कि रास्ते में आँहुज़ूर ﷺ ने कुतिया देखी जिसके बच्चे उसका दूध पी रहे थे। आप स. ने एक सहाबी को आदेश दिया कि वे उस कुतिया के सामने खड़े हो जाएं ताकि सेना में से कोई उस कुतिया अथवा उसके बच्चों से छेड़ छाड़ न करे।

आप स. ने जासूसों को पकड़ने के लिए एक घुड़ सवार दल आगे रवाना किया। यह दल बनू हवाज़न का एक जासूस पकड़ कर ले आया। आँहुज़ूर ﷺ ने उससे पूछा तो उसने बताया कि हवाज़न के लोग आपके लिए जमा हो रहे हैं। आप स. ने फ़रमाया कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह सर्वोत्तम सहायक है। आप स. ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को आदेश दिया कि इस जासूस को रोके रखें ताकि वह आगे जाकर लोगों को सूचित न कर दे।

आँहज़रत ﷺ ने मुसलमानों को क़बीलों में विभाजित करके उनको सेना बद्ध किया। हर क़बीले की सेना पर उन्हीं में से एक अफ़सर नियुक्त किया गया। अंसार को वंश के आधार पर बारह दलों में विभाजित किया, छः दल औस के तथा छः दल खिज़रज के नियुक्त फ़रमाए। मुहाजिरों के तीन

झंडे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ी, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ी. और हज़रत सअद बिन अबी वक्क़ास रज़ी. के पास थे।

इसी यात्रा के बीच आँहज़रत ﷺ के चचेरे एवं रज़ाई भाई (रज़ाई भाई- दो अलग अलग माओं के बच्चे जिन्होंने एक महिला का दूध पिया हो) हज़रत अबू सुफ़यान बिन हारिस, उनके बेटे जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बिन मुगैरा के ईमान लाने का वर्णन मिलता है। ये इस्लाम के घोर शत्रु थे, इस लिए आप स. के सामने आने से डरते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. जो अब्दुल्लाह बिन उमय्या की बहिन थीं, उन्होंने आप स. से निवेदन किया कि आप स. के चचेरे भाई अबू सुफ़यान और फुफेरे भाई अब्दुल्लाह आप स. से मिलने के इच्छुक हैं। आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे इनकी आवश्यकता नहीं, मैं इनसे मिलना नहीं चाहता, मेरे चचेरे भाई ने तो मेरा अपमान किया है। ये कवि थे तथा आप स. का परिहास किया करते थे और अब्दुल्लाह ने तो मक्के में क्या क्या अत्याचार नहीं किए। यह बात अबू सुफ़यान बिन हारिस को पहुँची तो उन्होंने भावुक होकर कहा कि यदि मुहमद ﷺ मुझसे प्रसन्न नहीं होते और मिलने की अनुमति नहीं देते तो मैं अपने बेटे को लेकर रेगिस्तानों की ओर निकल जाऊँगा यहाँ तक कि भूक और प्यास से मर जाऊं। नबी करीम ﷺ को यह बात पता चली तो आप स. का दिल तुरन्त दयालु हो गया। आप स. ने दोनों को बुलाया और उन्हें मिलने का सुअवसर प्रदान किया।

हज़रत अबू सुफ़यान बिन हारिस रज़ी. का निधन पन्द्रह अथवा बीस हिजरी में हुआ था और हज़रत उमर रज़ी. ने आप रज़ी. के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमय्या बिन मुगैरह रज़ी. का नाम हुज़ैफ़ा था और आप रज़ी. हुज़ूर ﷺ की फूफी अतिका के बेटे थे। आप रज़ी. उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा के भाई भी थे। आप रज़ी. ने इस्लाम क़बूल करने के बाद अति साहस के साथ हुनैन के युद्ध में भाग लिया और ताएँफ़ की लड़ाई में एक तीर लगने से शहादत पाई।

इस अभियान में हज़रत अब्बास के इस्लामी सेना में शामिल होने के विषय में लिखा है कि जब आँहुज़ूर ﷺ ने मदीने से मक्के की ओर यात्रा आरम्भ की तो हज़रत अब्बास रज़ी. ने मदीने की ओर हिजरत के लिए यात्रा का सामान बांधा, हज़रत अब्बास रज़ी. जोह्फ़ा में आँहज़रत ﷺ से आ मिले, आप रज़ी. ने अपना सामान मदीने भेज दिया और स्वंय आँहुज़ूर ﷺ के साथ मक्के की ओर चल पड़े। आप रज़ी. आँहुज़ूर ﷺ के चाचा थे और आयु में हुज़ूर ﷺ से दो या तीन वर्ष बड़े थे। अपने बेटे फ़ज़ल बिन अब्बास के कारण अबुलफ़ज़ल के उपनाम से विख्यात थे। हज़रत अबू तालिब के बाद सक़ाया अर्थात हाजियों को पानी पिलाना आप रज़ी. के ज़िम्मे था। आप रज़ी. हुनैन के युद्ध में आँहज़रत ﷺ के साथ सुदृढ़ता पूर्वक जमे रहे। बत्तीस अथवा तेंतीस हिजरी में आप रज़ी. की वफ़ात हुई।

आँहज़रत ﷺ की अति उत्तम सैन्य शैली तथा दुआओं के कारण इतना बड़ा चमत्कार घटित होता है कि मदीने से चलने वाली दस हज़ार की सेना लगभग चार सौ कि.मी. की यात्रा करती हुई मक्के से ठीक पांच मील की दूरी पर डेरे लगा चुकी है परन्तु अभी तक मक्के वालों को भनक नहीं पड़ी।

आँहज़रत ﷺ ने इशा के समय मक्के से पांच मील की दूरी पर मिरअतुज्ज़हरान में पड़ाव किया और सहाबा को निर्देश दिया तो उन्होंने दस हज़ार आगें रोशन कीं। आँहुज़ूर ﷺ ने हज़रत उमर रज़ी. को सेना की निगरानी के लिए नियुक्त किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि एह्ज़ाब के इतिहास के अतिरिक्त इतनी बड़ी सेना अरब के इतिहास में तय्यार नहीं हुई। एहज़ाब में दस बारह हज़ार आदमी था, मानो अरब के इतिहास में इतनी बड़ी सेना का यह दूसरा उदाहरण था। परन्तु मदीने से इतनी बड़ी सेना निकलती है और किसी को इसकी ख़बर तक नहीं होती और फिर अल्लाह तआला चमत्कार के रूप में दिखता है कि मैं उस नौबत खाने (ढोल) को बजाता हूँ जो मेरा है और उस नौबत ख़ाने को तोड़ रहा हूँ जो उनका है। अतएव जब रसूले करीम ﷺ निकले तो आपने फ़रमाया कि ऐ मेरे ख़ुदा! मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मक्के वालों के कानों को बहरा कर दे और उनके जासूसों को अँधा कर दे, न वे हमें देखें तथा न उनके कानों तक हमारी कोई बात पहुंचे।

मदीने में सैंकड़ों मुनाफ़िक़ मौजूद थे, किन्तु दस हज़ार की सेना मदीने से निकलती है और मक्के वालों को कुछ पता नहीं चलता, मक्के वाले चिन्तित अवश्य थे कि आप स. उन पर आक्रमण कर सकते हैं किन्तु उन्हें आभास नहीं था कि आप स. इतनी बड़ी सेना लेकर उनके निकट पहुँच चुके हैं। मक्का वाले ख़तरे के कारण रातों को आस पास के क्षेत्रों के चक्कर लगाया करते थे। ऐसी ही एक रात अबू सुफ़यान अपने दो साथियों हकीम बिन हज़ाम तथा एक अन्य सरदार के साथ पहरा देने के लिए घूम रहे थे कि उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में आगें देखीं तो अनुमान लगाने लगे। उन आगों ने अबू सुफ़यान और उसके साथियों को भयभीत कर दिया, अभी वे ये बातें कर ही रहे थे कि आँहज़रत ﷺ के जासूसों ने उन्हें पकड़ लिया और आँहुज़ूर ﷺ के सेवा में उपस्थित करने के लिए ले गए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसका विवरण काफ़ी लम्बा है जो इन्शाल्लाह आगे बयान होगा।

ख़ुत्ब: के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया- जैसे कि मैं सदेव कहता हूँ, दुआओं की ओर ध्यान देते रहें। अल्लाह तआला दुनिया को फ़सादों से बचाए, ऊपर नीचे जो अवस्था हो रही है, अल्लाह तआला बेहतर करे कि यह बेहतरी की ओर चली जाए, और अधिक विनाश की ओर न जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब